RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

PRE-PAID PRESS CENTRE
07 JAN 2016
JALANDHAR CITY R.M.S.

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : २ रु.
वर्ष: 72 अंक : 41
सृष्टि संवत् 1960853116
10 जनवरी 2016
व्यानन्दब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 41, 7/10 जनवरी 2016 तदनुसार 26 पौष सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

भगवान् के प्यारे

ले० श्री स्वामी वेदानन्द (व्यानन्द) तीर्थ

न तं जिनन्ति बहवो न दभ्रा उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत्।
प्रियः सुकृत्प्रिय इन्द्रे मनायुः प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी।।

–ऋ० ४।२५।५

शब्दार्थ–**न**-न **तम्**-उसको **बहवः**-बहुत लोग **जिनन्ति**-हानि पहुंचा सकते और **न**-न **दभ्राः**-थोड़े। **अदितिः**-अदिति माता **अस्मै**-इसको **उरु**-बड़ा **शर्म**-ठिकाना **यंसत्**-देती है। **सुकृत्**-सुकर्म करने वाला **इन्द्रे**-भगवान् के प्रति **प्रियः**-प्यारा होता है। **मनायुः**-मननशील, विचारवान्। **प्रियः**-प्यारा होता है। **सुप्रावीः**-उत्तम रीति से रक्षा करने वाला **प्रियः**-प्यारा होता है और **सोमी**-सोम वाला **अस्य**-इसका **प्रियः**-प्यारा होता है।

व्याख्या-इस मन्त्र में भगवान् के प्यारों के कुछ चिन्ह बताए हैं, जो बहुत ही मनन करने योग्य हैं। वे चिन्ह ये हैं-

1. सुकृत्-उत्तम कर्म करने वाला। भगवान् स्वयं **'स्वपाः'**-सुकर्मा है। **समानशीलव्यसनेषु सख्यम्**-जिन पर एक-सी विपत्ति हो अथवा जिनका शील एक-सा हो, उनमें परस्पर सखित्व-मैत्री हो सकती है। जब भगवान् स्वयं **'स्वपाः'**-सुकर्मा है, तो उसकी अकर्मा-निठल्ले या दुष्कर्मा से प्रीति कैसे हो सकती है ? दुष्कृतों की भगवान् से मैत्री हो नहीं सकती। भगवान् की मैत्री के लिए ऋतगामी होना चाहिए। और-

'ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः' –ऋ० ९।७३।६

दुष्कर्मकारी लोग ऋत के मार्ग पर नहीं चलते। ऋत पर चलना सुकर्म है, अतः सुकर्मा भगवान् का प्यारा होता है।

मनुष्य भगवान् से प्यार करता है ताकि वह उसे प्यार करे। वेद रीति बता रहा है, जिससे वह भगवान् का प्यारा बन जाए और भगवान् उससे प्यार करने लग जाए।

2. मनायुः-भगवान् का निरन्तर मनन करता हो। मन्द, मूढ़मति भगवान् का प्यारा नहीं हो सकता। उसे प्रीति की रीति की प्रतीति ही नहीं आती। वह क्या जाने प्रेम-पन्थ ?

मनन, श्रवण के पश्चात् ही हो सकता है, मनन श्रवण के बिना हो ही नहीं सकता। श्रवण के बिना किसका मनन करेगा ? भगवान् की कीर्ति सुनकर मनन करने से आचरण की, धारणा की प्रेरणा होती है। तात्पर्य यह है कि मनायु होने के लिए शुश्रुषु होना अनिवार्य है। भगवान् के गुणगाण सदा सुनना, सुनकर मनन करना, अर्थात् उनका अपने जीवन में कैसा उपयोग करना होता है, उसके पश्चात् धारण-निदिध्यासन होता है, अर्थात् भगवान् का प्रीतिपात्र बनने के लिए मनुष्य को श्रवण, मनन, निदिध्यासन का अनुष्ठान करना चाहिए।

3. सुप्रावीः-श्रवण-मनन से ज्ञात हुआ कि भगवान् सबकी रक्षा करता है, और प्रेमपूर्वक रक्षा करता है। भगवान् का प्यार चाहने वाले को भगवान् की प्रजा का प्रेमी, रक्षक बनना होगा। भगवत्प्रजा-प्राणियों को अपनी उदरदरी की पूर्ति के लिए विदीर्ण करने वाला हिंसक और भक्षक भगवान् का प्रेम प्राप्त ही नहीं कर सकता, अतः मनुष्य को यत्न करके प्राणीरक्षा का प्रेमपूर्ण कार्य करते रहना चाहिए। तात्पर्य यह निकला कि प्रभु-भक्त को अहिंसक मानकर मनसा, वचसा, वपुषा सबसे मित्रवत् व्यवहार करना चाहिए।

4. सोमी-सोम वाला। जिसके पास कोई पदार्थ हो, किन्तु वह न उसका उपभोग करे और न उपयोग करे, तो उसके पास उस वस्तु की सत्ता का कोई प्रमाण नहीं। यदि कोई सोम रखता हुआ भी दूसरों को सोम नहीं देता, तो उसके सोमी होने का कोई प्रमाण नहीं। स्वयं शान्त हो, दूसरों को शान्त कर सके, वही सोमी। सोमी बनने के लिए सुकृत्, मनायु तथा सुप्रावी होना अत्यन्त अपेक्षित है। सबसे प्रीति किए बिना-सुप्रावी हुए बिना शान्ति मिल ही नहीं सकती। वैर-विरोध करने से मन अशान्त, आत्मा उद्भ्रान्त रहता है। सबसे प्रीति की भावना मनन के बिना असम्भव है। संसार के व्यवहार पर जब मनुष्य विचार करता है, तो उसे अनुभव होता है कि वैर-विरोध का फल वैर-विरोध है, अतः वह **'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'** अपने को बुरे लगने वाले व्यवहार दूसरों के साथ नहीं करता। सबको आत्मवत् समझने लगता है, यही मनन की भावना उसे सुप्रावी बना देती है और मनुष्य मनन करने के पूर्व, सुकर्मा बनने के लिए आत्मवत् सबको समझने की अवस्था से उत्तम कर्म करने लगता है जो इन साधनों से सम्पन्न हो लेता है, वह अवश्य सोमी हो जाता है।

भगवान् की प्रीति-प्राप्ति के लिए न्यून-से-न्यून ये चार गुण अवश्य होने चाहिएं। जिनमें ये चार गुण हों, उसको कोई हानि नहीं पहुंचा सकता। चाहे कितनी संख्या में हानिकारक लोग क्यों न हों ? सबसे बड़ी बात यह है कि-**'उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत्'**-माता, जगन्माता ऐसे प्रेमी को विशाल ठिकाना देती है।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

ऋषि-सम्मत शिक्षा विज्ञान

-ले० डा. सुकामा आचार्या, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा

'शिक्षा' मानव-समाज का अभिन्न अंग होने के कारण मानव के निर्माण का प्रमुख घटक है। मनुष्य की जीवन-यात्रा का आरम्भ शिक्षण से होता है, तदर्थ प्रयत्नशील हुआ वह 'विद्यार्जन' की साधना ही व्यक्ति के भावी जीवन की सफलता का मूलमन्त्र है। समुचित विकसित जीवन के लिए शिक्षा की महत्ता को सभी ने मुक्तकण्ठ से अंगीकार किया है, किन्तु विडम्बना यही है कि शिक्षा-जगत् में प्रबल प्रयत्न करने पर भी मानव का समुचित निर्माण एवं विकास दृष्टिगोचर नहीं हो रहा। अत: अद्यतन परिस्थितियों में शिक्षा सम्बन्धी गम्भीर मन्थन की आवश्यकता है।

समय-समय पर मनीषियों द्वारा शिक्षा को परिभाषित किया जाता रहा है। यहां यह महान् शिक्षाविद् महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के स्वरूप को उद्घाटित करने का प्रयास करेंगे, जिसके परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति-निर्माण की इकाई के साथ समाज व राष्ट्र का निर्माण सम्भव है। शिक्षा के विषय में ऋषि की मान्यता है-'जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें, उसको शिक्षा कहते है।' इसी तथ्य को स्वामी जी 'व्यवहारभानु' में स्पष्ट करते हुए लिखते हैं-'जिसमें मनुष्य विद्या आदि शुभगुणों की प्राप्ति और अविद्यादि दोषों को छोड़ के सदा आनन्दित हो सके, वह शिक्षा कहाती है। शिक्षा की यह परिभाषा महर्षि पाणिनि की 'शिक्ष विद्योपादाने' धातु का व्याख्यान करती प्रतीत होती है।'

महर्षि के मन्तव्यानुसार 'शिक्षा' परिष्कार तथा संस्काराधान का प्रथम साधन है। इसी विचार से उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के द्वितीय एवं तृतीय समुल्लास प्रमुखत: शिक्षा के सम्बन्ध में ही लिखे, जिनमें शिक्षा के प्राथमिक व मूलभूत सिद्धान्तों का वर्णन करते हुए बालशिक्षा तथा अध्ययना-ध्यापन-विधि के अन्तर्गत शिक्षणालयों के लिए पाठ्यक्रम की भी समायोजना की है। 'शिक्षा' मानव-निर्माण की प्रमुख सोपान है-इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए द्वितीय समुल्सास के आरम्भ में शतपथ का प्रमाण करते हुए स्वामी जी लिखते हैं-'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद' अर्थात् प्रशस्त माता, प्रशस्त पिता तथा प्रशस्त आचार्य वाला मनुष्य ही ज्ञानवान होता है। सुयोग्य माता-पिता व आचार्य के संरक्षण में बालक मानवीय गुणों को धारण करके 'मानव' संज्ञा को सार्थक करता है।

इस समुल्लास में वर्णित बाल-शिक्षा की उत्तम सरणि गृहस्थियों के लिए वरणीय तथा अत्यन्त उपादेय है। यह मनुष्य-निर्माण की आधारभूत शिक्षा है, जिसे माता-पिता द्वारा गृहकुल में ही प्रदान किया जाता है। तदनन्तर गुरुकुल-पाठशाला में अध्ययन का क्रम प्रारम्भ होता है, जिसमें वह आचार्य का अन्तेवासी बनकर शास्त्रीय ज्ञान को अधिगत करता हुआ उसे आचरणरूप में भी आत्मसात् करता है तथा विद्या-व्रत-स्नातक की उपाधि से अंलकृत हो गुरु से विदा लेकर समावर्तन के साथ गृहकुल में लौट आता है। इस शिक्षा-प्राप्ति में सुयोग्य शिक्षकों की अहं भूमिका है। विद्वान् शिक्षक का स्वरूप तथा उसके कर्त्तव्य का बोध वेद में विस्तार से वर्णित किया गया है। वेद की दृष्टि में विद्वान् कहलाने के लिए केवल विद्या ही आवश्यक नहीं अपितु उसके साथ तपस्या, धार्मिकता व सदाचार आदि गुण भी होने चाहिए। ऋग्वेदीय प्रमाण से स्वामी दयानन्द लिखते हैं-'वही वस्तुत: विद्वान् है जो स्वयं धर्म मार्ग पर चलता हुआ अन्यों को सुगम और दुर्गम मार्गों में से धर्म मार्ग का उपदेश कर सके।'

स्वामी दयानन्द ने मन्त्रों के भाष्य में विद्वानों के कर्त्तव्यों का प्रतिपादन करते हुए उन पर विद्या-प्रचार तथा समाज सुधार का एक बड़ा उत्तरदायित्व सौंपा है। निम्न पंक्तियां विद्वानों के कर्त्तव्यों पर सुन्दर प्रकाश डालती हैं-

विद्वानों को चाहिए कि अविद्या की निन्दा और दोषों का निवारण करें। जो शरीर और मन को विषयासक्ति, प्रमाद, हिंसा आदि खोटे कामों में लगाते हैं, उन्हें उनसे दूर करें तथा सर्वत्र सद्गुणों का प्रसार करें। विद्वज्जन सब मनुष्यों को सब विद्याएं पढ़ाकर विद्यावान्, बहुश्रुत, स्वच्छन्द और सुरक्षित कर दें, जिसमें वे संशय रहित होकर सदा सुखी रहें।

विद्वान् शिक्षक का कर्त्तव्य राष्ट्र के भावी कर्णधार शिष्यों को विद्या एवं चरित्र दोनों की शिक्षा देकर सुयोग्य बनाना है, एतदर्थ उन्हें अगाध पाण्डित्य के साथ-साथ सच्चारित्र्य, धार्मिकता आदि अन्य विविध गुणों से भी भूषित करना आवश्यक है। अध्यापक कैसे हों? एस विषय में स्वामी जी लिखते हैं-जो नवीन-नवीन विद्याओं का ग्रहण करने के इच्छुक, ऐश्वर्य के अभिलाषी, जितेन्द्रिय, विद्वान अध्यापक लोग अज्ञानियों को ज्ञान देकर विद्वान् करते हैं, वे ही पूजनीय होते है। आगे लिखते हैं-जो मेधावी, परोपकारी, आप्त विद्वान्, पूर्ण पण्डित, विद्या के ऐश्वर्य से युक्त, अहिंसक, ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय पुरुष हो, उसी को योग्य अध्यापक जानकर शिष्यों को प्रश्नोतर-विधि से अपनी सभी शंकाएं निवृत करनी चाहिए, किन्तु जो अविद्वान, ईर्ष्यालु, कपटी, स्वार्थी मनुष्य हो, उससे सर्वदा दूर रहना चाहिए।

जैसे अध्यापकों का विद्यार्थियों के प्रति कर्त्तव्य है कि उन्हें प्रेम से विद्या पढ़ाकर दोषों के निवारण द्वारा सुसंस्कृत कर विद्वान् बनाएं, वैसे ही विद्यार्थियों का भी अध्यापकों के प्रति कर्त्तव्य है कि तन-मन-धन से सदा उनकी सेवा करें और उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न होने दें। इस विषय में ऋषिवर दयानन्द ने जिन महत्त्वपूर्ण बातों पर ध्यान आकृष्ट किया है, वे निम्न हैं-

विद्यार्थियों को उचित है कि वे विद्वान् अध्यापकों का मन, वाणी और कर्म से सत्कार करके सुसंस्कृत अन्नादि से नित्य उनकी सेवा किया करें। विद्यार्थीगण विद्या में प्रख्यात पाठशालाध्यक्ष आचार्य की बुद्धिपूर्वक अभ्यर्थना किया करें। जो विद्यार्थी आप्त, शास्त्रज्ञ, धर्मात्मा, पुरुषार्थी, विद्वान् अध्यापकों से विद्या और शिक्षा प्राप्त कर धर्मयुक्त व्यवहार का आचरण करते हैं, उनका जन्म सफल होता है। विद्यार्थी जन विद्या तथा सत्योपदेश देने वाले आचार्य का श्रेष्ठ पुष्कल दक्षिणा से सत्कार करें।

विद्यार्थी को योग्य है कि ब्रह्मचर्य से वीर्य का निग्रह कर विद्या की कामना करता हुआ आचार्य के समीप जा, सेवा करके, परिमित आहार-विहार करता हुआ नीरोग रहकर विद्याप्राप्ति के लिए अधिकाधिक प्रयत्नशील हो। वे ही विद्यार्थी श्रेष्ठ होते हैं, जो उत्साह के साथ पठित पाठ की उत्तम परीक्षा देते हैं। किन्तु आज पठन-पाठन में गुरु-शिष्य परम्परा का यह उदात्त क्रम विलुप्तप्राय है, परिणामत: जीवन में शिक्षा के अवतरण का भी अवसान ही दृष्टिगत होता है शिक्षा का जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है। मूल्यविहीन शिक्षा-पद्धति में मानवीय मूल्यों का होता हुआ अवमुल्यन हमें चिढ़ा रहा है कि कौन है शिक्षित? नैतिकता के अभाव में शिक्षित भी अशिक्षित ही हैं। आज उन्नति में भी अवनति दृष्टिगोचर होती है। ऐसी शोचनीय अवस्था में आशा की किरण है तो केवल आर्ष-शिक्षा ही है, जिसमें शिक्षा जीवन की भाषा है। महर्षि देव दयानन्द की दिव्य दृष्टि ने इस मर्म को समझा। उन्होंने पठन-पाठनविधि के अन्तर्गत ऋषिकृत ग्रन्थों के अध्ययन का निर्देश किया, जिससे शिक्षा जीवन-निर्माण का आधारस्तम्भ बन सके। इस सन्दर्भ में वे आर्षग्रन्थों के लाभ तथा अनार्षग्रन्थों की हानि दर्शाते हुए लिखते हैं-'आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना और बहुमूल्य मोतियों का पाना, क्योंकि महर्षि लोगों का आशय स्वल्प समय में सुगमता पूर्वक विद्या को ग्रहण कराने का होता है किन्तु क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहां तक हो सके, वहां तक कठिन रचना करनी, जिसको बड़े परिश्रम से पढ़के अल्प लाभ उठा सकें जैसे पहाड़ का खोदना, कौड़ी का लाभ होना।'

महर्षि मनु ने तो असत्य ग्रन्थों के अध्ययन को महापातकों में परिगणित किया है। ये असत्य ग्रन्थ ही ऋषि दयानन्द की दृष्टि में अनार्ष ग्रन्थ है,-जिनका परिगणन उन्होंने परित्याज्य ग्रन्थों के रूप में किया है। स्वामी जी ने उन्हें 'जाल-ग्रन्थ' की संज्ञा दी है तथा 'विषसम्पृक्तान्नवत्' सर्वथा वर्ज्य लिखा है। (शेष पृष्ठ 5 पर)

वैदिक धर्म और आंग्ल नववर्ष 2016

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

वर्तमान समय में हमने व हमारे देश में आंग्ल संवत्सर व वर्ष को अपनाया हुआ है। इस आंग्ल वर्ष का आरम्भ 2015 वर्ष पूर्व ईसा मसीह के जन्म वर्ष व उसके एक वर्ष बाद हुआ था। अनेक लोगों को कई बार इस विषय में भ्रान्ति हो जाती है कि यह आंग्ल संवत्सर ही सृष्टि में मनुष्यों की उत्पत्ति व उनके आरम्भ का काल है। अत: इस लेख द्वारा हम निराकरण करना चाहते हैं कि अंग्रेजी काल गणना दिन, महीने व वर्ष की गणना के आरम्भ होने से पूर्व भी यह संसार चला आ रहा था और उन दिनों भारत में धर्म, संस्कृति व सभ्यता सारे संसार में सर्वाधिक उन्नत थी और इसी देश से ऋषि व विद्वान विदेशों में जाकर वेद और वैदिक संस्कृति का प्रचार करते थे।

अब से 5,200 वर्ष हुए महाभारत युद्ध के कारण संसार के अन्य देशों में वेदों के प्रचार व प्रसार का कार्य बन्द हो जाने और साथ ही भारत में भी अध्ययन व अध्यापन का संगठित समुचित प्रबन्ध न होने के कारण भारत व अन्य देशों में विद्या व ज्ञान की दृष्टि से अन्धकार छा गया। इस अविद्यान्धकार के कारण ही भारत में बौद्ध व जैन मतों के आविर्भाव सहित विश्व के अन्य देशों में पारसी, ईसाई व मुस्लिम मतों का आविर्भाव हुआ।

1 जनवरी सन् 0001 का आरम्भ वर्ष ईसा मसीह के अनुयायियों द्वारा प्रचलित ईसा संवत है। इससे पूर्व वहां कोई संवत् प्रचलित था या नहीं, ज्ञात नहीं है। हमें लगता है कि इससे पहले वहां संवत् काल गणना किसी अन्य प्रकार से की जाती रही होगी। उसी से उन्होंने सप्ताह के 7 दिनों के नाम, महीनों के नाम आदि लिए और उन्हें प्रचलित किया। अंग्रेज़ी संवत् अस्तित्व में आने से पूर्व भारत में संवत्सर की गणना लगभग 1.960853 अरब वर्षों से होती आ रही थी। भारत में सप्ताह के 7 दिन, बारह महीने, कृष्ण व शुक्ल पक्ष, अमावस्या व पूर्णिमा आदि प्रचलित थे। नये वर्ष का आरम्भ यहां चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से होता था व अब भी यह परम्परा अबाध रूप से जारी है जिसे भारत के ब्राह्मण कुलों में जन्में विद्वान व आर्य लोग मानते चले आ रहे हैं। ऐसा लगता भी है कि यह प्राय: निश्चित है कि भारत से ही 7 दिनों का सप्ताह, इनके नाम, लगभग 30 दिन का महीना, वर्ष में बारह व उनके नाम आदि कुछ उच्चारण भेद सहित देश देशान्तर में प्रचलित थे। उन्हीं को अपना कर वर्तमान में प्रचलित आंग्ल वर्ष व काल गणना को अपनाया गया है। हमारे सोमवार को उन्होंने मनडे (चन्द्र-सोमवार) व रविवार को सनडे (सूर्यवार) बना दिया। यह हिन्दी शब्दों का एक प्रकार से अंग्रेज़ी रूपान्तर ही है। अंग्रेज़ी संवत्सर की यह कमी है कि इससे सृष्टि काल का ज्ञान नहीं होता जबकि भारत का सृष्टि संवत् सृष्टि के आरम्भ से आज तक सुरक्षित चला आ रहा है। विज्ञान के आधार पर सृष्टि की आयु 1.96 अरब लगभग सही सिद्ध होती है। क्या हमारे यूरोप के विदेशी बन्धुओं को आर्यों व वैदिकों के इस पुष्ट सृष्टि सम्वत् को नहीं अपनाना चाहिए था ? इसे उन्होंने पक्षपात व कुण्ठा के कारण नहीं अपनाया। उनमें यह भी भावना थी कि उन्हें अपने ईसाई मत का प्रचार व लोगों का धर्मान्तरण करना था, इसलिए उन्होंने भारतीय ज्ञान व विज्ञान की जान बूझकर उपेक्षा की और इसके साथ ही अपने मिथ्या विश्वासों को दूसरों पर थोंपने का प्रयास भी किया। यदि महर्षि दयानन्द जी का प्रादुर्भाव न हुआ होता तो उनके द्वारा फैलाये गए सभी भ्रम विश्व में प्रचलित हो जाते परन्तु महर्षि दयानन्द ने अपने अपूर्व पुरुषार्थ से वैदिक काल के अनेक सत्य रहस्यों को खोज लिया और उनका डिण्डिम घोष कर भारत व यूरोप के विद्वानों को हतप्रभ कर दिया।

भारतीय नववर्ष चैत्र महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ होता है। यही दिवस नव वर्ष के लिए सर्वथा उपयुक्त व सर्वस्वीकार्य है। यह ऐसा समय होता है जब शीत का प्रभाव समाप्त हो गया होता है। ग्रीष्म और वर्षा ऋतुओं का आरम्भ इसके कुछ समय बाद होता है। इस नव वर्ष के अवसर पर पतझड़ व शीत ऋतु समाप्त होकर ऋतु अत्यन्त सुहावनी होती है। वृक्ष नये पत्तों को धारण किए हरे-भरे होते हैं तथा प्राय: सभी प्रकार के फूल व फल वृक्षों में लगे होते हैं, सर्वत्र फूलों की सुगन्ध से वातावरण सुगन्धित व लुभावना होता है जिसे प्रकृति का श्रृंगार कहा जा सकता है। ऐसी अनेक विशेषताओं से युक्त यह समय ही नव वर्ष के उपयुक्त होता है। हमें लगता है कि विदेशी विद्वानों के पक्षपात के कारण हम अनेक सत्य मान्यताओं को विश्व स्तर पर मनवा व अपना नहीं सकें। आज तो सर्वत्र पूर्वाग्रह व पक्षपात दृष्टिगोचर हो रहे हैं। सर्वत्र सभी क्षेत्रों में प्राय: रूढ़िवादिता छाई हुई है। अब किसी पुरानी कम महत्त्व की परम्परा को छोड़कर उसमें सुधार व परिवर्तन कर उसे विश्व स्तर पर आरम्भ करना व असम्भव ही है।

वैदिक सन्ध्या व यज्ञ दो ऐसे महत्ता से युक्त मनुष्यों के दैनिक आवश्यक कर्त्तव्य हैं जिनका आचरण व व्यवहार करने से मनुष्यों को अनेकानेक लाभ होते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने बताया है कि सन्ध्या में ईश्वर का ध्यान सहित उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना की जाती है। शुद्ध शाकाहारी भोजन और विचारों की शुद्धता पवित्रता पर ध्यान दिया जाता है। सुखासन में लगभग 1 घंटा बैठकर ईश्वर की ध्यान पद्धति द्वारा स्तुति की जाती है। स्तुति का अर्थ है ईश्वर के गुणों का ध्यान व उल्लेख करना। इससे ईश्वर से प्रेम व प्रीति होती है। प्रेम व प्रीति से मित्रता होती है। और इससे वरिष्ठ मित्र से कनिष्ठ मित्र को स्तुति के अनुसार लाभ प्राप्त होता है। स्तुति से अहंकार का नाश भी होता है। स्तुति करने से मनुष्य के गुण, कर्म व स्वभाव सुधरते हैं, और वह ईश्वर के कुछ-कुछ व अधिकांश समान हो जाते हैं। हमारे सभी ऋषि व मुनि ईश्वर के गुण कर्म व स्वभाव के अनुरूप गुणों वाले ही होते थे। स्तुति को जानने, समझने व करने के लिए वेदों व वैदिक साहित्य का ज्ञान व अध्ययन भी आवश्यक है। बिना इसके ईश्वर की भली प्रकार सारगर्भित व पूर्णता से युक्त स्तुति नहीं हो सकती। इसी प्रकार से ईश्वर से प्रार्थना का भी महत्त्व है। इससे भी स्तुति के समान सभी लाभ प्राप्त होते हैं और इच्छित वस्तु की ईश्वर से प्राप्ति होती है।

प्रार्थना अहंकार नाश में सर्वाधिक लाभप्रद होती है। अंहकारशून्य मनुष्य ही समाज, देश व विश्व का कल्याण कर सकता है। अहंकार युक्त मनुष्य तो अपनी ही हानि करता है, उससे दूसरों को किसी प्रकार के लाभ का तो प्रश्न ही नहीं होता। उपासना भी स्तुति व प्रार्थना को सफल करने में सहायक व अनिवार्य है। महर्षि दयानन्द इसका यह फल बताते हैं कि ईश्वर की स्तुति करने से उससे प्रीति, उसके गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण, कर्म, स्वभाव का सुधारना, प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना उद्देश्य पूरे होते हैं।

स्तुति, प्रार्थना, उपासना व समाधियोग से अविद्यादि मल नष्ट होते हैं। जिस मनुष्य ने आत्मस्थ होकर परमात्मा में चित्त को लगाया है उसको जो परमात्मा के योग अर्थात् सान्निध्य व समीप का सुख होता है, वह वाणी से कहा नहीं जा सकता है क्योंकि उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्त: करण से ग्रहण करता है। उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। अष्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने अर्थात् उपासना करने से सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिए जो-जो काम करना होता है वह सब को करना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

केवल एक ही पति

-ले० इन्द्रजित देव चूना भट्टिया, यमुनानगर

''आर्य मर्यादा'', जालन्धर के 22 नवम्बर, 2015 के अंक में श्री अभिमन्यु कुमार का एक लेख ''एक या पांच'' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है जिसमें द्रौपदी के पांच पति होने की बात सन्दर्भ व प्रमाण बिना लिखी है। इस निबन्ध द्वारा हम कुछ तथ्यों का उद्घाटन करने का नन्हा-सा प्रयास कर रहे हैं।

हमारा निवेदन है कि महाभारत में लगभग 22 गुणा प्रक्षेप हुआ है। मूलत: यह ग्रन्थ व्यास मुनि ने चार सहस्त्र और चार सौ श्लोकों में ''जय'' नाम से बनाया था, परन्तु उनके शिष्यों ने पांच सहस्त्र छ: सौ श्लोक युक्त करके इसे ''भारत'' नाम दे दिया। तदनन्तर इसे महाभारत नाम दिया गया तथा आज यह लगभग एक लाख श्लोकों का वृहद् पोथा हमारे पास है। स्वार्थी व अज्ञानी लोगों द्वारा की गई मिलावट के रहते ग्रन्थ का मूल स्वरूप जानना अत्यन्त कठिन है। इतिहास में कई विद्वानों के नाम हैं जिन्होंने महाभारत पर अनुसन्धानात्मक कार्य किया है परन्तु सौ प्रतिशत सहमति कुछ विषयों पर नहीं बन पाई। इस स्थिति में हम श्री अभिमन्यु कुमार द्वारा उठाए गए 'द्रौपदी के पांच पति थे अथवा एक पति था' विषय पर सप्रमाण व सतर्क अपने विचार प्रकट करने का नन्हा-सा प्रयास करते हैं।

लाक्षागृह में लगाई गई अग्नि से बचकर कुन्ती व पांचों पुत्र पाण्डव यत्र-तत्र घूमते हुए राजा द्रुपद के राज्य में एक कुम्हार के घर में ब्राह्मण वेश में रह रहे थे। वहां उन्हें कोई भी व्यक्ति पहचान न पाया। राजा द्रुपद के मन में सदैव यह इच्छा रहती थी कि पाण्डुनन्दन अर्जुन के साथ द्रौपदी का विवाह करूं परन्तु वे अपने इस मनोरथ को किसी पर प्रकट नहीं करते थे। पांचाल नरेश ने कुन्ती पुत्र अर्जुन को खोज निकालने हेतु एक ऐसा दृढ़ धनुष बनवाया जिसे दूसरा कोई झुका न सके। द्रुपद ने एक कृत्रिम आकाश यन्त्र भी बनाया जो तीव्र वेग से आकाश में घूमता था। उस यन्त्र से छिद्र के ऊपर उन्होंने उसी के बराबर का लक्ष्य तैयार कराया व रख दिया। उन्होंने यह घोषणा कराई कि जो वीर इस धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर इन प्रस्तुत वाणों द्वारा ही यन्त्र के छेद के भीतर से इसे लांघकर लक्ष्यवेध करेगा, वही मेरी पुत्री को प्राप्त करेगा।

स्वयंवर के दिन अनेक राजा व ब्राह्मणादि एकत्र हुए। द्रौपदी एक स्वर्ण माला (सोने की बनी माला) हाथ में लिए रंगभूमि में पधारी। अनेक राजाओं ने बारी-बारी स्वयंवर में विजय प्राप्त करने के भरसक प्रयत्न किए परन्तु सभी असफल रहे। अनेक मुंह मोड़ लेने के पश्चात् वीर वर अर्जुन उठे तथा रुक्म, सुनीथ, वक्र, कर्ण, दुर्योधन, शल्य तथा शल्वादि धनुर्वेद के पारंगत विद्वान पुरुष सिंह राजा लोग जिस धनुष पर डोरी न चढ़ा सके थे, उसी धनुष पर पराक्रमी, वीरों में श्रेष्ठता का अधिमान रखने वाले इन्द्र कुमार अर्जुन ने पलक मारते ही डोरी चढ़ा दी। तत्पश्चात् उसने वे पांच बाण भी हाथ में ले लिए और उन्हें चलाकर बात ही बात में लक्ष्य को वेध दिया। वह बिंधा हुआ लक्ष्य अत्यन्त छिन्न-भिन्न होकर यन्त्र के छेद से सहसा पृथिवी पर गिर पड़ा।

पूरी सभा में कोलाहल मच गया। तब-

तस्मिंस्तु शब्दे महति प्रवृद्धे युधिष्ठिरो धर्मभृतांवरिष्ठ:।

आवासमेवोपजगाम शीघ्रं सार्ध यमाभ्यां पुरुषोत्तमाभ्याम्।।

-महाभारत, आदि पर्व, अध्याय 187, श्लोक 26

अर्थात् जब महान् कोलाहल बढ़ने लगा, तब धर्मात्माओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर पुरुषोत्तम नकुल तथा सहदेव को साथ लेकर अपने डेरे (अपनी माता कुन्ती के पास कुम्हार के घर) पर चले गए। वे उस माता के पास गए जो-

तेषां, माता बहुविधं विनाशं पर्यचिन्तयत्।

अनागच्छत्सु पुत्रेषु भैक्ष्य-कालेऽभिगच्छति।।

धार्तराष्ट्रैर्हता न स्युर्विज्ञाय कुरुपुङ्गवा:।

मायान्वितैर्वा रक्षोभि: सुघोरै-र्दृढ़वैरिभि:।।

-महाभारत, आदि पर्व, श्लोक, 44-45

अर्थ-इधर भिक्षा से लौटने के समय व्यतीत होने पर भी जब पुत्र नहीं लौटे थे तो उनकी माता कुन्ती देवी स्नेहवश अनेक प्रकार की चिन्ताओं में डूबकर उनके विनाश की आशंका कर रही थी-कहीं ऐसा तो नहीं कि धृतराष्ट्र के पुत्रों ने कुरुक्षेत्र पाण्डवों को पहचानकर उनकी हत्या कर दी हो ? अथवा दृढ़तापूर्वक वैर भाव को मन में रखने वाले महाभयंकर मायावी राक्षसों ने मेरे पुत्रों की जीवन लीला समाप्त कर दी हो ?

घटना का तनिक विश्लेषण करना अपेक्षित है-अपने भाई अर्जुन द्वारा स्वयंवर जीतने वाला अति महत्त्वपूर्ण समाचार अर्जुन व भीम से पहले माता के पास पहुंचे। युधिष्ठिर, नकुल तथा सहदेव में से किसी एक पुत्र ने भी माता को नहीं दिया होगा, यह सर्वथा अमान्य व असम्भव है। यदि यह समाचार न भी दिया होगा तो स्वयं माता ने अवश्यमेव पहले लौटे पुत्रों से यह पूछा होगा कि तुम तीन पहले आ गए हो परन्' भीम व अर्जुन कहां हैं ? वे क्यों नहीं आए ? स्पष्ट है कि माता ने पूछा होगा तब यह कैसे माना जा सकता है कि युधिष्ठिर, नकुल व सहदेव ने स्वयंवर में अर्जुन द्वारा प्राप्त सफलता का सुखद समाचार न दिया होगा तथा यह भी न बताया होगा कि भीम व अर्जुन अभी वहीं रुके हुए हैं एवं वे भी शीघ्र ही आ जाएंगे। इस स्थिति में कुन्ती माता को भ्रम होना कि पुत्र भिक्षा मांगने गए हैं, सर्वथा अस्वाभाविक, असंगत, असंभव तथा अमान्य है।

उपरोक्त प्रमाण से यह भी सिद्ध होता है कि माता कुन्ती को इस बात का ज्ञान था कि मेरे पुत्र आज राजा द्रुपद द्वारा आयोजित स्वयंवर में गए हैं, न कि भिक्षा मांगने गए हैं। इसके लिए स्वयंवर की घटना से पूर्व की घटनाओं पर भी ध्यान दिलाना हम उचित समझते हैं।

जब कुन्ती व पांचों पुत्र एकचक्रा नगरी में ठहरे हुए थे, तब वहां एक ब्राह्मण ने उन्हें पांचाल देश में पौष मास के शुक्ल पक्ष में शुभ तिथि एकादशी के रोहिणी नक्षत्र में द्रौपदी-स्वयंवर के आयोजन होने की सूचना देते हुए कहा था कि पांचाल कुमारी आपके पांचों पुत्रों में से किसी एक को अपना पति चुन सकती है अथवा मंझले पुत्र का वरण कर सकती है। मैं भी शिष्यों के साथ वहीं जा रहा हूं। यदि ठीक प्रतीत होवे तो आप भी हमारे साथ चलो-

पुण्यमासे तुरोहिण्यां शुक्लपक्षे शुभे तिथौ।

दिवसै: पञ्चतप्रत्या भविष्यति स्वयंवर:।।

तव पुत्रा: महात्मना: दर्शनीया विशेषत:।

यदृच्छया तु पांचाली गच्छेद् वा मध्यमं पतिम।

नित्यकालं सुभिक्षास्ते पांचा-लस्तु तपोधने।

ब्राह्मण्यां नागराश्च ब्राह्मणा-श्चातिथि प्रिया:।।

-आदि पर्व, 166वां अध्याय

पुत्रों की सहमति व इच्छा से सभी जने पांचाल देश को चलने के लिए तैयार हो गए तो एक दिन कृष्ण द्वैपायन व्यास मुनि उनसे मिलने आ गए। वे बोले-

पांचाल नगरे गत्वा निवसध्वं महाबला:।

सुखिनो द्रौपदीं प्राप्य भविष्यथ न संशय:।

-आदि पर्व, अध्याय 168, श्लोक 15

अर्थ-हे महाबाहो! अब तुम पांचाल नगर में जाकर रहो। द्रौपदी को प्राप्त करके तुम सब सुखी होवोगे। इसमें संशय नहीं। तत्पश्चात् पाण्डवों ने धौम्यमुनि को अपना पुरोहित नियुक्त करके अपने साथ लिया व उन्हें विश्वास हो गया कि अपना राज्य हमें प्राप्त होकर रहेगा व द्रौपदी हमें मिल जाएगी-

ते समाशंसिरे लब्धां श्रियं राज्यं च पाण्डवा:।

ब्राह्मणं तं पुरस्कृत्य पञ्चालीं च स्वयंवरे।।

-आदि पर्व, अध्याय 182, श्लोक 8

इस विवरण से सिद्ध होता है कि पूरी जानकारी व पूर्ण तैयारी से पाण्डव पांचाल देश में गए थे व एक कुम्हार के घर में रहते हुए स्वयंवर दिवस पर स्वयंवर स्थल पर पहुंचे थे। आगे क्या हुआ, यह पूर्व लिखित है। (**क्रमश:**)

पृष्ठ 3 का शेष-वैदिक धर्म.....

उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। अष्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने अर्थात् उपासना करने से सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामीरूप से प्रत्यक्ष करने के लिए जो-जो काम करना होता है वह सबको करना चाहिए। महर्षि दयानन्द एक सिद्ध व सफल योगी थे। इनके ये शब्द स्वानुभूत हैं। इसके शंका व संदेह का कोई कारण नहीं। यदि मनुष्य जन्म में ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरूप को उसकी योग विधि से उपासना नहीं की और ईश्वर का साक्षात्कार करने का प्रयत्न नहीं किया, तो मनुष्य कितनी ही भौतिक उन्नति कर लें, उपासना व समाधि सुख की तुलना में वह अपार भौतिक सुख हेय व निम्नतर है। अत: हमें विदेशी मान्यताओं को गुण-दोष के आधार पर मानने के साथ अपने पूर्वजों, ऋषि-महर्षियों की विरासत को भी, सम्भालना है वह उसे भावी पीढ़ियों को सौंपना है। इस कार्य के लिए हमारे आदर्श राम, कृष्ण, दयानन्द, चाणक्य आदि हैं। उनका अध्ययन व अनुकरण कर हमें अपने जीवन को सफल करना चाहिए। यही महापुरुष विश्व वरणीय भी हैं। यज्ञ के बारे में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इससे वायुमण्डल व पर्यावरण शुद्ध बनता है। जीवन में सुख व आरोग्य की वृद्धि व प्राप्ति होती है। यज्ञ से हम ही नहीं अपितु यज्ञ स्थान से दूर-दूर तक के सभी प्राणी लाभान्वित व सुखी होते हैं। यज्ञ अग्निहोत्र हवन एक शुभ कर्म है और इसे ऋषियों द्वारा श्रेष्ठतम धर्म कहा कहा है। यज्ञ न केवल हमारे वर्तमान जीवन में अपितु भावी जन्मों में भी जीवात्मा को लाभ पहुंचाता है और इसके कर्त्ता को अगले जन्म में उन्नत मनुष्य योनि मिलने की गारण्टी देता है। महात्मा ईसा मसीह बीसी 1 में पैदा हुए। उन्हीं के नाम से ईसा सम्वत् आरम्भ हुआ। 27 से 33 वर्ष का उनका जीवन होने का अनुमान है। उन्होंने जो धार्मिक विचार दिए उससे उनके देश व निकटवर्ती स्थानों पर सामाजिक परिवर्तन एवं सुधार हुए। इन सुधारों से ही उन्नति करते हुए वह आज की स्थिति में पहुंचे हैं। उनके अनुयायियों ने धर्म के अतिरिक्त अन्य जिन मान्यताओं को तर्क व युक्ति के आधार पर स्वीकार किया, वह उनकी प्रगति का आधार बना। उसकी उन्नति के प्रभाव ने ही उसके काल सम्वत को विश्व स्तर पर स्वीकार कराने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत में भी सम्प्रति यही संवत् प्रचलित हो गया है। यत्र-तत्र कुछ प्राचीन वैदिक व सनातन धर्म के विचारों के लोग सृष्टि संवत् व विक्रमी संवत् का प्रयोग भी करते हैं जो जारी रहना चाहिए। जिससे आने वाली पीढ़ियां उसे जानकर उससे लाभ ले सकें। नये आंग्ल वर्ष के दिन सभी मनुष्य एक दूसरे को नए वर्ष की शुभकामनाएं देते हैं। इसमें कोई बुराई नहीं हैं। शुभकामनाएं तो हमें सभी को पूरे वर्ष देनी चाहिएं।

हमारे यहां संस्कृत का एक श्लोक खूब गाया व बोला जाता है। यह श्लोक 'सर्वे भवन्तु सुखिन' सर्वे सन्तु निरामया:। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग्भवेत्। हमें लगता है कि सबके प्रति शुभकामना करने का यह श्लोक सर्वाधिक भाव व अर्थ प्रधान वाक्य, कथन व पद्य है। पाठकों के लिए पद्यानुवाद भी प्रस्तुत है। पहला पद्यानुवाद है : 'सबका भला करो भगवान् सब पर दया करो भगवान्! सब पर कृपा करो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण।' दूसरा पद्यानुवाद: 'हे ईश! सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी, सब हों नीरोग भगवन्! धन-धान्य के भण्डारी। सब भद्रभाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों, दुखिया न होवे कोई सृष्टि में प्राणधारी।

एक अन्य तीसरा पद्यानुवाद है 'सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय, यह अभिलाषा हम सबकी भगवन पूरी होये। इस श्लोक के प्रतिदिन उच्चारण सहित गायत्री मन्त्र व ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना उपासना के 8 मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करने से भी अनेक लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं। निष्कर्ष में हम यह कहना चाहते हैं कि हमें समाज में रहना है। अत: जो हमारे निकट हो रहा है हम उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। हमें जो भी नए वर्ष की शुभकामना देता है, उसे स्वीकार करें और उसे भी अपनी शुभकामनाएं दें। उनसे ये अनुरोध करें कि वह चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के भारतीय नव वर्ष को भी इसी प्रकार से सोत्साह मनाएं और अपने सभी मित्रों को इसी प्रकार से शुभकामनाएं दें।

पृष्ठ 2 का शेष-ऋषि-सम्मत.....

सदैव, उन्होंने समग्र उपयोगी विषयों के पठनीय ग्रन्थों की सूची तथा उनका शिक्षण-क्रम स. प्र. के तृतीय समुल्लास में विस्तार से प्रतिपाादित किया है।

अद्यत्वे पाश्चात्य शिक्षा-पद्धति पर आधारित विद्यालयों में प्रचलित दूषित सह-शिक्षा पद्धति व सभी विषयों को थोड़े-थोड़े समय में पढ़ने का विधान स्वामी जी द्वारा विहित पद्धति में नहीं है। यह अवैदिक व्यवस्था है। स्वामी जी को बालक-बालिकाओं की सह-शिक्षा मान्य नहीं है। इस विषय में ऋषि अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं-'लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोस एक-दूसरे से दूर होनी चाहिए। वहां जो अध्यापिका और अध्यापक पुरुष का भृत्य-अनुचर हों, वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। एक ऋग्वेद की ऋचा के भावार्थ में स्वामीजी लिखते हैं-हे विद्वानों! जो धर्मात्मा विदुषी स्त्रियां हों, उनसे सब कन्याओं को शिक्षा दिलाओ, जिसमें कार्य-हानि न हो तथा सब कन्याएं विद्यायुक्त होकर अत्युत्तम कर्मों को करें। इसी प्रसंग में महर्षि दयानन्द ने स्त्री-शिक्षा की अनिवार्यता को वेद के प्रमाण से प्रमाणित कर 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्' के मनमाने वचनों को अनर्थक सिद्ध करते हुए मानवमात्र को चाहे वह स्त्री हो वा शूद्र, सभी मनुष्यों को वेदादिशास्त्रों के पढ़ने-सुनने के अधिकार का शंखनाद किया और अन्य भी अनेक प्रमाणों तथा तर्कादि से स्त्री-शिक्षा का प्रबल समर्थन किया। सदैव, एक समाज में एक ही विषय के अधययन में पूरा समय लगाकर क्रमश: विषयों के अध्ययन की विधि महर्षि दयानन्द ने दर्शायी है। शिक्षा-प्राप्ति का यह क्रम शिक्षा को जीवन्त कर देता है। गुरु के गर्भ में रहकर प्राप्त की गई शिक्षा ज्ञान व कर्म के परिपाक में फलवती हो जाती है। ज्ञान व कर्म का यह समन्वय मणि-कांचण संयोग के समान मनुष्य को पूर्णता की ओर ले जाता है। वह पुरुषार्थचतुष्टय की सोपान-परम्परा से स्वलक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ होता है।

महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में शिक्षा के विभिन्न बिन्दुयों पर व्यापक प्रकाश डालते हुए ऋग्वेद तथा यजुर्वेद के भाष्य में भी अनेक वेदमन्त्रों का शिक्षापरक अर्थ करते होए शिक्षाविषयक महत्त्वपूर्ण तथ्यों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है, जिसके माध्यम से वैदिक शिक्षा-विज्ञान भी हमारे सम्मुख व्यक्त होता है। ऋषि के मन्तव्यानुसार वेद में शिक्षा की उपादेयता तथा, अनिवार्यता, विद्या प्राप्ति के उपाय, शिक्षकों की योग्यता तथा कर्त्तव्य, विद्यार्थियों के कर्त्तव्य, विद्वान अध्यापक द्वारा सुपात्र-कुपात्र के विचारपूर्वक विद्या-दान, विद्वानों के कर्त्तव्य तथा उनके द्वारा शिल्पविद्या की उन्नति, समाज में विद्वानों का सेवन व सत्कार, कन्याओं की शिक्षा में दण्ड का विधान, राज्य-कार्यों में विद्वानों के सत्परामर्श की ग्राह्यता आदि विषयों का सम्यक् स्पष्टीकरण दृष्टि से भी अत्यन्त उपयोगी हैं। शिक्षा के सफल को पाने के लिए आज के निर्धारित शिक्षा-सम्बन्धी मापदण्ड परिवर्तनीय हैं। पूर्वकाल में भी वेदों की सहायता लेकर ही गौतम, वशिष्ठ, आपस्तम्ब आदि धर्मसूत्रकारों ने स्वग्रन्थों में ब्रह्मचारी शिष्य के कर्त्तव्य, आचार्य का महत्त्व तथा उनके कर्त्तव्य, अध्ययनाध्यापनविधि आदि प्रकरण प्रतिपादित किये हैं। वेदों में शिक्षा विषयक वे तत्व कहां किस प्रकार निहित हैं यह प्रमुखतया दयानन्द के वेदभाष्य से ही हमें ज्ञात होता है।

शिक्षाविद् ऋषिवर देव दयानन्द द्वारा लिखित साहित्य में जिस शिक्षा-विज्ञान का विशद वर्णन मिलता है, निश्चय ही शिक्षा की उस सरणि से छात्रों को शिक्षित-दीक्षित करने वाले सुयोग्य शिक्षक के प्रयास से वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्र-सम्बन्धी समस्त समस्याओं का निदान हमारे निष्कलुष मन-मस्तिष्क में है और निर्मल अन्त:करण का निर्माण शिक्षक, आचार्य, गुरुजनों के अधीन है। अत: 'शिक्षक' वह प्रमाणभूत प्रज्ञा है, जिसके प्रकाश में व्यक्ति अपना एवं समाज का मार्ग प्रशस्त कर सकता है, फिर चाहे वह समस्या किसी भी प्रकार की हो। उत्तम शिक्षा के इस सर्वातिशायी महत्त्व को हमें आज के परिवेश में एक नवीन परिवर्तन के साथ स्वीकार करना चाहिए। नूतन निर्माण की यही सही दिशा है, नान्य: पन्था।

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना की गतिविधियां

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। 30 दिसम्बर को बच्चों का ड्राइंग कम्पीटीशन करवाया गया जिसमें प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले विद्यार्थियों को मैडल, ट्राफी और प्रमाण पत्र दिये गये। 31 दिसम्बर को स्कूल में हर वर्ष की तरह स्पोर्टस मिलन का आगाज किया गया जिसका उद्घाटन श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल जी ने किया। फिर उसके पश्चात बच्चों ने गायत्री मंत्र का पाठ किया जिसमें सबने उनका साथ दिया। फिर उसके बाद लैमन रेस की गई फिर फ्रोग रेस, लेग रेस, रिले रेस करवाई गई। इन सभी में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले बच्चों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के पश्चात स्कूल के प्रधान श्री संत कुमार जी आर्य ने सब को सम्बोधित करते हुये कहा कि आज के बच्चे हमारे भारत का भविष्य हैं। हमें उनका पूरा ख्याल रखना चाहिये कि यह स्कूल से कभी छुट्टी न करें और अपनी पढ़ाई की तरफ पूरा ध्यान दें। तभी हमारा स्कूल एवं समाज तरक्की कर सकेगा। फिर स्कूल प्रिंसीपल श्रीमती सुनीता मलिक ने भी बच्चों को पढ़ाई की महता बताते हुए कहा कि हमें सदा होम वर्क करके आना चाहिये क्योंकि जो बच्चे अपनी पढ़ाई की तरफ ध्यान देते हैं वह अपने जीवन में सदैव आगे बढ़ते रहते हैं। 1 जनवरी 2016 को स्कूल में मासिक हवन यज्ञ किया गया जिसे पंडित योगराज शास्त्री जी ने करवाया। जिसमें स्कूल का स्टाफ, विद्यार्थी और प्रबन्ध समिति के सदस्य शामिल हुये। इस अवसर पर श्री गोपाल कृष्ण जी, संजीव चडढा जी, सतपाल नारंग, श्री वजीर चंद जी, हर्ष आर्य, रमाकांत, सुरिन्द्र टंडन, विजय सरीन, अरुण सूद जी शामिल हुये। शांति पाठ के पश्चात यज्ञ शेष बांटा गया।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी का बलिदान दिवस मनाया

वैदिक सत्संग परिवार पंजाब के तत्वावधान में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज का बलिदान दिवस बड़े श्रद्धा एवं उल्लास के साथ 408 पटेल नगर जालन्धर रोड कपूरथला में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। इसके पश्चात आचार्य देवराज जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुये कहा कि स्वामी जी का जीवन हमें संदेश देता है कि अगर आदमी ठान ले तो क्या नहीं कर सकता। स्वामी जी का जीवन कैसा था और कैसा बनाया सभी भली भान्ति जानते हैं। स्वामी जी का जीवन प्रेरणादायक है और जीवन के हर क्षेत्र में अनुकरणीय है। उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से काशी में पहली भेंट कर वर्णन करते हुये बताया कि किस तरह वह महात्मा मुंशी राम बने और तत्पश्चात मृत्युजंय स्वामी श्रद्धानंद बन गये।

स्वामी जी ईश्वर भक्त, राष्ट्र भक्त, सेवा भक्त, समाज के हर क्षेत्र में कार्य करने वाले जन जन प्रिय नेता थे। उन्होंने आए हुये लोगों को आह्वान किया कि आओ हम भी स्वामी जी के जीवन से प्रेरणा पाकर अपना जीवन श्रेष्ठ व वैदिक धर्मी बन कर कल्याण मार्ग के पथिक बने। इसके पश्चात प्रधान श्री नरेन्द्र कुमार सूद जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी का प्रेरणादायक भजन सुना कर सब का मन मोह लिया। इस अवसर पर सभी पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे। श्री अमन सूद एवं सोनिया सूद अपने सुपुत्र श्री आर्यन सूद जी के जन्म दिवस पर पावन यज्ञ के मुख्य यजमान बने। शांति पाठ के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया। **-राजेश मेहता**

वेदवाणी

प्रभु कृपा से

उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः।
स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि।। ऋ० १।४।६

विनय-हे पापों और बुराइयों का उपक्षय करने वाले जगदीश्वर! तुम्हारी कृपा से मैं इतना उच्च हो जाऊं कि मेरी अच्छाइयों का बखान मेरे शत्रु भी करें। मेरी ओर से तो मेरा कोई शत्रु नहीं होना चाहिए, परन्तु जो मेरे प्रतिद्वन्दी हैं-जिनके विचार मेरे विचारों से नहीं मिलते, जो मेरे वायुमण्डल से बिल्कुल उल्टे वायुमण्डल में रहते हैं। उन मेरे विरोधी भाइयों के लिए यह स्वाभाविक होगा कि उनके कानों में सदा मेरे अवगुण ही पहुंचे और उनका दृष्टिकोण ही ऐसा होगा कि उन्हें मेरी बुराइयां ही सहज में दिखाई देवें, परन्तु हे प्रभो! यदि मेरा जीवन बिल्कुल पवित्र होगा, मेरे आचरण में सर्वथा सचाई और शुद्धता होगी तो मेरे जीवन का उस दूरस्थ (विचारों से मुझसे दूर रहने वाले) भाई पर भी प्रभाव क्यों न होगा ? बस, हे प्रभो! मेरे अन्दर से सब बुराइयों का नाश करके मुझे ऐसा उच्च बना दो कि जो मुझसे अत्यन्त विपरीत परिस्थिति में रहते हैं उन पर भी मेरी अच्छाई की उच्चता की छाप पड़े बिना न रहे। सामान्य मनुष्य तो मुझे अच्छा कहेंगे ही, मेरी स्तुति करेंगे ही, परन्तु इन विरोधियों के अन्तःकरण भी मेरी विशुद्धता को पहचानें, यही इच्छा है। अपने सच्चे विरोधियों से जो यश मिलेगा वह खरा यश होगा, उसमें अत्युक्ति आदि का खोट न होगा। मित्रों और उदासीनों से तो यश मिला ही करता है, उसमें कुछ विशेषता नहीं, उसका कुछ मूल्य नहीं।

परन्तु हे प्रभो! इस यश को पाकर मैं फूल नहीं जाऊंगा, तुम्हें भूल नहीं जाऊंगा, वरन् इस यश को भूला रहकर सदा तुम्हारी ही याद में सुखी रहूंगा। यह यश मेरी विशुद्धता की पहचान मात्र होगा, यह मेरे सुख का कारण कभी नहीं होगा। मेरा सुख तो तुम्हारी शरण में है। बाहरी दुनिया चाहे मेरी घोर निन्दा करे, मुझे अपमानित करे, तो भी मैं तेरे प्रसाद से पाए सुख से वैसा ही सुखी रहूंगा जैसा कि बाहरी यश पाने पर हूं। मेरा सुख या दुःख बाहरी यश या अपयश पर अवलम्बित न होगा। हे प्रभो! ऐसी कृपा करो कि तुझ परमेश्वर की प्रसन्नता से पाए हुए सुख में ही मैं सदा सुखी, आनन्दित और सन्तुष्ट रहूं। बाहरी यश द्वारा सुख पाने की चाह मुझमें कभी उत्पन्न न हो, बाहरी यश मिलते रहने पर भी उस यश से सुख पाने की चाह मुझमे कभी उत्पन्न न हो। मैं तुम्हारे ही सुख में रहूं। **-वैदिक विनय से साभार**

आर्य समाज तलवाडा का चुनाव सम्पन्न

दिनांक 27 दिसम्बर 2015 को प्रात:काल हवन यज्ञ के पश्चात आर्य समाज के सभी सदस्यों की एक महत्वपूर्ण बैठक सभागार में हुई जिसमें आर्य समाज का चुनाव सम्पन्न हुआ। सर्वसम्मति से श्री रजनी कांत जी प्रधान, श्री सत्यपाल रलहन जी मंत्री और श्री रोहित शर्मा जी कोषाध्यक्ष चुने गये। **-सत्यपाल रल्हन मंत्री आर्य समाज**

मकर संक्रान्ति पर्व

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार दाल बाजार लुधियाना में मकर संक्रान्ति पर्व 14 जनवरी 2016 दिन वीरवार को बाद दोपहर 2:30 से 5:00 बजे तक बड़ी श्रद्धा से मनाया जा रहा है। जिसमें विश्व शान्ति के लिए मंगलमय गायत्री महायज्ञ होगा। यज्ञ के ब्रह्मा पं. कर्मवीर जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज होंगे। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य सुश्रुत जी पानीपत को आमन्त्रित किया गया है। आप सभी भाई बहन परिवार सहित पधार कर पुण्य प्राप्त करें और कार्यक्रम की शोभा बढाएँ।

-जनक रानी मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज

जन्म दिन धूमधाम से मनाया

आर्य महिला सभा द्वारा माता जगदीश रानी आर्या जी का 85 वां जन्मदिन बड़ी ही धूमधाम और श्रद्धा के साथ उनके निवास स्थान पर मनाया गया। इस कार्यक्रम में सैकड़ों बहनों ने भाग लिया और माता जी की लम्बी आयु और स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना की। इस कार्यक्रम में वन्दना आर्य ने माता जी के जीवन पर प्रकाश ड़ाला और बताया कि माता जी पिछले 58 वर्षों से आर्य समाज को अपनी सेवाएं दे रही हैं। घर-घर वह ऋषि दयानन्द जी के उपदेशों को पहुंचा रही हैं। समय-समय पर वह जरूरतमन्दों और गरीबों की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहती हैं। कार्यक्रम के अन्त में पुष्प वर्षा की गई और जलपान भी कराया गया। माता जी ने सबका धन्यवाद किया। **-वन्दना आर्य आर्य महिला सभा**

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मन्दिर गांधी नगर-2 का वार्षिक उत्सव दिनांक 14 से 20 सितम्बर तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय शास्त्री जी के प्रवचन और भजनोपदेशक श्री अरूण वेदालंकार जी के मधुर भजन और आर्य समाज के नियमों के अनुसार वेद कथा का प्रवाह पूरे सप्ताह चलाया। जिसे श्रोताओं ने लग्न से सुना। दिनांक 20-12-2015 को सुबह 9:30 बजे पं. विजय कुमार शास्त्री व पं. मनोहर लाल आर्य जी ने हवन यज्ञ के द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। आए हुए सभी श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुतियां ड़ाली। एडवोकेट श्री अशोक परूथी जी एवं वरिष्ठ उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी ने अपने विचारों द्वारा सभी को बहुत प्रभावित किया। ऋषि दयानन्द के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला। ऋषि लंगर के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सारे कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री बूटी राम जी, श्री सुभाष भगत जी, श्री कमल कुमार जी, श्री रविन्द्र कुमार जी, श्री पुरूषोत्तम कुमार जी, श्री तारा चन्द जी, श्री अशोक कुमार जी, श्री जोगिन्द्र पाल जी, श्री सुरजीत कुमार आदि ने भरपूर सहयोग देकर सारे कार्यक्रम को सफल बनाया। **-रविन्द्र कुमार आर्य समाज**

आर्य समाज फोकल प्वायंट में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज फोकल प्वायंट लुधियाना के साप्ताहिक सत्संग में अमर हुतात्मा, कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानंद जी और समाज और राष्ट्र की बलिवेदी पर बलिदान देने वाले अन्य महान शहीदों और क्रान्तिकारियों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये वयोवृद्ध श्रद्धेय श्री बलदेव राज आर्य ने विस्तारपूर्वक स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन के प्रेरक प्रसंगों को प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि एक निडर स्वतंत्रता सेनानी स्वामी जी ने चांदनी चौक दिल्ली में अंग्रेजी सेना के सामने सीना तान कर कहा कि हिम्मत है तो चलाओ गोली। हिन्दू से मुसलमान बन गये लाखों लोगों को पुन: वैदिक धर्म में वापस लाने का श्रेय भी स्वामी श्रद्धानन्द जी को ही जाता है।

जामा मस्जिद दिल्ली की मिम्बर पर से वेद मंत्रों का उच्चारण करने वाले स्वामी जी पहले और आखिरी वक्ता थे। असगरी बेगम को शुद्ध करके शान्ति देवी का नाम देकर वापिस वैदिक धर्म में लाने पर पूरा मुस्लिम समाज और यहां तक कि महात्मा गांधी जी भी उनसे नाराज हो गये। जब महात्मा गांधी ने स्वामी जी को शुद्धि आन्दोलन बंद करने के लिये कहा तो स्वामी जी ने कहा कि यदि मुस्लिम हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करना बंद कर दें तो मैं भी शुद्धि आन्दोलन बंद कर दूंगा। 23 दिसम्बर 1926 को एक मतान्ध मुसलमान अब्दुल रशीद धर्म चर्चा करने के बहाने स्वामी जी से मिलने आया और रूग्ण अवस्था में स्वामी श्रद्धानंद जी को गोलियां मार कर शहीद कर दिया। हत्यारे को स्वामी जी के सेवक धर्मपाल ने पकड कर पुलिस के हवाले कर दिया जिसे बाद में फांसी की सजा दी गई। इस अवसर पर देश धर्म और समाज की बलिवेदी पर न्यौछावर होने वाले सभी जाने-अनजाने शहीदों को भी श्रद्धा सुमन अर्पित किये। **-महेन्द्र प्रताप आर्य उप प्रधान**

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर में दिनांक 20 दिसम्बर 2015 दिन रविवार को आर्य जगत् के महान बलिदानी, कर्मयोगी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ से हुआ जिसके मुख्य यजमान श्री मुकेश आनन्द जी थे। भजन प्रेमियों ने भजनों के माध्यम से स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजंलि अर्पित की। मुख्य वक्ता पं. ओम प्रकाश शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश ड़ालते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रथम भेंट महर्षि दयानन्द से बरेली में हुई थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी उनसे प्रभावित हुए और 1902 में गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में नवीन क्रान्ति का सूत्रपात किया। वे स्वामी श्रद्धानन्द ही थे जिन्होंने अंग्रेजों के रोलेट एक्ट का जोरदार विरोध कर भारत में इसे लागू नहीं होने दिया। इसके साथ-साथ स्वामी जी ने अमृतसर में हुए जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड़ के बाद कांग्रेस के अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष की भूमिका निभाई। इस अवसर पर सर्वश्री दर्शन कुमार, हीरा लाल कंधारी, जुगल किशोर आहूजा, राकेश मेहरा, सोमदत्त सूद, धर्मवीर, प्रवीन तलवाड़, दीपक महाजन आदि उपस्थित थे।

-राकेश मेहरा महामन्त्री आर्य समाज

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

जालन्धर आर्य समाज अड्डा होशियारपुर एवं महर्षि दयानन्द मठ वेद मन्दिर ढन्न मोहल्ला के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस 27 दिसम्बर 2015 रविवार को आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ से हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर थे। श्री सोहन लाल जी सेठ एवं श्री रवि मित्तल जी ने सपत्नीक मुख्य यजमान बनकर यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञ के पश्चात सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया गया। हवन यज्ञ के पश्चात सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन जी एवं गुरूकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों ने स्वामी श्रद्धानन्द एवं देशभक्ति के भजन गाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। भजनों के पश्चात आचार्य उदयन आर्य गुरूकुल करतारपुर एवं आचार्य सुरेश शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश ड़ालकर अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित की। मुख्य वक्ता प्रिं. श्री रमेश चन्द्र जीवन जी चण्ड़ीगढ ने स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी जी एक कर्मयोगी थे। उनका सम्पूर्ण जीवन अपनी संस्कृति, धर्म और राष्ट्र के प्रति समर्पित था। ऐसे कर्मयोगी, धर्मवीर, अमर हुतात्मा का बलिदान दिवस मनाते हुए हमें भी उनके जीवन से शिक्षा लेकर आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणादायक है। उन्होंने प्रत्येक कार्य को स्वार्थ की भावना से उठकर किया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम के संयोजक प्रिं. श्रवण भारद्वाज जी ने किया। अन्त में श्री सोहन लाल सेठ जी ने आए हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में दोनों समाजों के अधिकारियों ने पूर्ण सहयोग दिया। इस अवसर पर सर्वश्री कुन्दन लाल अग्रवाल, श्री रवि मित्तल, श्री सत्यशरण गुप्ता, श्री ध्रुव मित्तल, श्री आर. के. अरोड़ा, श्री रमेश कालड़ा, श्री कपूरचन्द गर्ग आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ और सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

-विनोद सेठ प्रधान आर्य समाज अड्डा होशियारपुर

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज जालन्धर छावनी में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम यज्ञ किया गया जिसमें मुख्य यजमान श्री राकेश आर्य जी, श्री अशोक जावेद जी, श्री रघुवीर जादौन जी थे। यज्ञ के पश्चात भजन हुए तथा पं. नन्द दुलाल जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश ड़ाला। मंच का संचालन आर्य समाज के मन्त्री श्री जवाहर लाल महाजन ने किया। अन्त में सभी ने जलपान किया और शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। **-जवाहर महाजन मन्त्री आर्य समाज**

मोगा में श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज मोगा के तत्वावधान में आर्य माडल हाई स्कूल में दिनांक 23 दिसम्बर 2015 को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी का बलिदान दिवस मनाया गया। जिसमें प्रात: 9 बजे से 10 बजे तक बृहद यज्ञ किया गया। इसके उपरान्त मुख्य एवं सम्मानित अतिथि समादरणीय श्री प्रेम भारद्वाज जी महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं समादरणीय श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब के आगमन पर उनका संगीतों की धुनों एवं पुष्पहारों से भव्य स्वागत किया गया। अनन्तर आर्य माडल हाई स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा उनके सम्मान में स्वागत गान किया गया। पश्चात विद्यार्थियों ने अपने अपने गीतों, कविताओं एवं भाषणों द्वारा स्वामी श्रद्धानंद जी के प्रेरक ज्ञानवर्द्धक तथा अनुकरणीय जीवन पर प्रकाश डाला। सम्मानित अतिथि श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं श्री अशोक परूथी जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के विशाल जीवन के अनेकों प्रेरक प्रसंगों को सुना कर जन समूह को अनुप्राणित किया। सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने सम्बोधित करते हुये कहा कि स्वामी जी ने शुद्धि आन्दोलन बड़े जोर शोर से चलाया। स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज के निर्देश पर भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा स्थापित हुई। मुसलमानों की शुद्धि से मुस्लिमों में भारी उत्तेजना पैदा हो गई और वही मुसलमान जो कभी स्वामी जी पर पूरा विश्वास करते थे अब उनके विरूद्ध हो गये। मुसलमान अब्दुल रशीद धर्म चर्चा करने के बहाने स्वामी जी से मिलने आया और रूग्ण अवस्था में स्वामी श्रद्धानंद जी को गोलियां मार कर शहीद कर दिया। बच्चों द्वारा बेटी बचाओ कार्यक्रम की भव्य स्तुति ने सबके मन को प्रेरित किया एवं सभी भाव विभोर हुये। आर्य प्रतिनिधि सभ पंजाब की ओर से इस प्रस्तुति से प्रसन्न होकर बच्चों को सम्मानित किया गया। आर्य माडल स्कूल मोगा के मैनेजिंग कमेटी के प्रधान श्री सत्य प्रकाश जी उप्पल ने सभी घटकों का धन्यवाद किया एवं स्वामी जी के अनुकरणीय जीवन पर आलोकपात किया एवं इसे अपने जीवन में अपनाने के लिये प्रेरित किया। श्रीमती सुनीता गौड़ प्रिंसीपल आर्य माडल हाई स्कूल ने भी सम्बोधित किया। अंश लेने वाले सभी छात्रों को प्रोत्साहित किया गया। शांति पाठ अनन्तर सभी ने मध्याहन भोज प्रीतिपूर्वक ग्रहण किया।

आर्य माडल हाई स्कूल मोगा में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्री प्रेम भारद्वाज जी सभा महामंत्री एवं श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार के मोगा पहुंचने पर उनका स्वागत करते हुये श्री नरेन्द्र सूद जी ऊपर एवं नीचे इस अवसर पर स्कूल प्रबन्ध समिति के सदस्य एवं सभा अधिकारी सम्मानित किये गये बच्चों के साथ।

लुधियाना में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया समारोह

जिला आर्य सभा लुधियाना द्वारा स्वामी श्रद्धानंद के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में भव्य समारोह का आयोजन रविवार 27 दिसम्बर को आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल लुधियाना में किया गया। समारोह का शुभारम्भ पं. रमेश कुमार जी शास्त्री ने पवित्र यज्ञ से करवाया। तीन यज्ञ कुंडों पर चारों ओर बैठे यजमानों ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियां प्रदान कीं। यज्ञ का प्रबन्ध श्री श्रवण कुमार बत्रा जी ने कुशलतापूर्वक किया। यज्ञ के उपरान्त श्री विजय सरीन एवं पं. रमेश कुमार जी ने प्रभु भक्ति के भजन सुनाए। इस समारोह की ज्योति का प्रज्जवल श्रीमती नीलम थापर एवं श्री अरुण जी थापर ने किया।

उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने फूल मालाएं अर्पित कर उनका हार्दिक अभिनन्दन किया। श्री मनीष जी मदान, श्रीमती नीलम थापर एवं श्रीमती इन्द्रा होंडा जी इस समारोह के विशिष्ट अतिथि रहे। इस कार्यक्रम में श्री श्रवण कुमार जी बत्रा ने स्वामी श्रद्धानंद पर आधारित कविता प्रस्तुत की तथा पं. कर्मवीर जी शास्त्री ने जला वतन की शमां पर बन वैदिक परवाना, वह स्वामी श्रद्धानंद दीवाना भजन सुना कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। चण्डीगढ़ से पधारे डा. वीरेन्द्र अलंकार जी ने अपने प्रवचनों में स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा किये गये महान कार्यों का उल्लेख किया जैसे कि भारतीय संस्कृति पर आधारित गुरुकुलों की स्थापना, दलित उद्धार, नारी शिक्षा, वेद प्रचार एवं राष्ट्र की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण योगदान आदि। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि हमारा राष्ट्र भारत तभी बच सकता है जब इसमें रहने वाले सभी आर्य समाज के साथ जुड़े क्योंकि आर्य समाज वेद के सही अर्थों को समझा कर सभी धर्मों के लोगों को इकट्ठा करने का प्रयास करता है। मंच का संचालन महामंत्री डा. विजय सरीन जी ने किया। जिला सभा की प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा जी ने परमपिता परमात्मा का धन्यवाद करने के पश्चात सभी विद्वानों तथा उपस्थित आर्य जनों का धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम में लुधियाना नगर की सभी आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों व शिक्षण संस्थाओं के साथ साथ आर्य समाज साहनेवाल, समराला, पुरोहित सभा लुधियाना एवं आर्य वीर दल लुधियाना के सदस्य सम्मिलित हुये। कोषाध्यक्ष श्री सुशील मोदगिल तथा श्री संजीव चड्ढा, रमाकांत महाजन तथा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल का इस कार्यक्रम को सफल बनाने का विशेष योगदान रहा। शांति पाठ के पश्चात सभी ने मिल कर ऋषि लंगर ग्रहण किया।

–विजय सरीन

जिला आर्य सभा लुधियाना द्वारा स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पधारे आर्य बहिनें एवं आर्य जन।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।